63

॥ अथ वकारादिसहस्रनामप्रारम्भः ॥

॥ व का॰ ॥ श्रीगणेशायनमः ॥ ॥ देवदेवमहेशानसर्वज्ञसकलेश्वरः ॥ त्वत्तःश्रु
॥ १ ॥ तामहादेवीश्रीमतीवगलामुखी ॥ १ ॥ मंत्राश्चसकलादेवश्रुताःसर्वे
महेश्वरः ॥ साम्प्रतंश्रोतुमिच्छामितस्यानामसहस्रकम् ॥ २ ॥ वक्तुमर्हसि
देवेशयद्यस्तिकरुणामयि ॥ ईश्वरउवाच ॥ शृणुदेविमहेशानिरह
स्यम्परमाद्भुतम् ॥ ३ ॥ यन्नकुत्रापिवाख्यातंत्वत्स्नेहात्कथयामिते ॥
श्रीमद्वगलामुख्यानाम्नामष्टसहस्रकम् ॥ ४ ॥ गोपनीयंप्रयत्ने
नस्त्वयोनिशिवपार्वति ॥ सर्वसिद्धिकरन्देविसर्वोपद्रवनाशनम् ॥ ५ ॥
यस्यसंकीर्त्तनान्निस्यम्वगलामुखीदति ॥ ॐ अस्यश्रीवगलामु॰ ॥ एम॰ ॥
खीकाराद्यष्टोत्तरसहस्रनामस्तोत्रमंत्रस्यभैरवऋषिनुष्टुप्छन्दोवग ॥ १ ॥
व

लामुखीदेवताचतुर्वर्गसाधनेविनियोगः॥ ह्लीँबगलावारुणीब्रा॰
ह्मीवेदागमविनोदिनी॥ ६॥ वेदवाहस्तावाणीवाग्देवीवशिनीवरा॥
वारुणालयमध्यस्थावरदाविश्वमोहिनी॥ ७॥ विश्वरूपावरारोहाव
न्धूकारुणविग्रहा॥ विशोकावासवीब्राह्मीवरदाविश्वरूपिणी॥ ८॥
वैष्णवीवैष्णवप्रीताविष्णुपत्नीवसुप्रदावलावलवतीवहुविघ्नविना नना ५
शिनी॥ ९॥ वह्नकीवाघनिरतावडवानलरूपिणी॥ वारुणाननमा॰
नाचवैरिवर्गविभेदिनी॥ १०॥ विन्ध्याचलसुताविद्याविम्बारुणशरी
रिणी॥ वशिष्ठाराधिताविश्वाधीशानन्दविधायिनी॥ ११॥ वलाकावा
सवाधारावेणुवादनतत्परा॥ वेद्यविद्यावेदविद्याब्रह्मविद्याविधीश्वरी

॥वका॰॥ १२॥ वेदमातावेदमंत्रा वेदमंत्रस्वरूपिणी॥ विष्णुप्रिया विरूपाक्षि वि
॥ २ ॥ श्वेदविविमोहिनी॥ १३॥ वाराणसीवलाध्यावलभद्रविदारिका ॥ ए २
विपाशा विबुधा विद्या बोधिनी बुद्धिदायिनी॥ १४॥ वौद्धमार्गप्रचारे च
आगममार्गावतारिणी॥ वकुलोन्मादसुभगा वाह्लादा वामनप्रिया॥ १५॥
वेदागमपुराणादि विदग्धावासवप्रिया॥ वामनाब्राह्मणीवामावामाचा
रप्रकाशिनी॥ १६॥ ब्रह्मण्या ब्रह्मदा वाचा वाक्रूपिणी ध्यानतत्परा॥ ब्रह्मणान
न्दजननी ब्रह्मानन्दविधायिनी॥ १७॥ वारणा वरणा वाला वालचन्द्रवि
धारिणी॥ विद्याधरा विघ्नहन्त्री विद्या द्या विश्ववासिनी॥ १८॥ विश्वेश्वरी ॥ एम: ॥
विरूपा च वला रातिर्वरप्रदा॥ विद्याविलास विमला विमलाम्बरधारिणी ॥ २ ॥

॥ १९ ॥ विचित्ररत्नवसनाविविधानन्ददायिनी ॥ विबोधनविधात्री च
विज्ञानोदयकारिणी ॥ २० ॥ विज्ञानरूपिणी विज्ञा विश्वविज्ञानदीपिका
॥ विशिष्टा वेदजननी विबुधेन्द्रपरिष्टुता ॥ २१ ॥ विधानदक्षा विजया वि
नीता विनयान्विता ॥ विनता विनतापुत्रवाहिनी वाहिनीकला ॥ २२ ॥ बालि
का बालचन्द्राभा वामनी विबुधप्रिया ॥ वर्णेश्वरी वर्णरूपा वर्णमालाव॰
लार्चिता ॥ २३ ॥ विश्वावसुनताङ्घ्री बलिपूज्या बलाधरा ॥ वेणीवेवव
तीवेगा वलदेवप्रपूजिता ॥ २४ ॥ बलिप्रिया बलिप्रीता बलिदानपरायणा
॥ बलवृद्धिकरी हृद्या वीणावादनतत्परा ॥ २५ ॥ बलवर्णधरा वर्णा वरदा
नरतावसुः ॥ वैश्वानरी विश्वधरा विन्दुचक्रकृतालया ॥ २६ ॥ विचित्राङ्गी

॥वका॰॥ विचित्राचवज्रिणीवज्रधारिणी॥ वीवासनकरीवेद्यावेदाध्ययनत
॥ ३ ॥ त्परा॥२७॥ विरिंचीन्द्रनुतावेदीवाग्मतीविसवीवरा॥ वामदेवप्रियावा
सीवलिमप्रनिवासिनी॥२८॥ वीरेश्वरीवीरमातावीरवन्द्याविराजि
ता॥ वीरव्रतधरावीरा वीरसाधनतत्परा॥२९॥ वीरसिद्धिप्रदावीरहृद
मध्यगताव्रती॥ वहुवीरप्रसूताबुद्धाबुद्धधर्मप्रवर्द्धिनी॥३०॥ बुद्धमाता॰
वीरसुतावीरासनगतावशी॥ वीरावलीपूजीताचवीजपूरधरावहू॥३१॥
वीजरूपालसद्बीजावीजमंत्रस्वरूपिणी॥ विशिष्टभूषणधरावोसु
कीरूपधारिणी॥३२॥ वारिजासनसंस्थाचवारिजासनसंस्तुता॥ विचि ॥ल्म:॥
त्रवस्त्रवसनाविचित्रावारिजेक्षणा॥ ३३॥ वारिरूपधरावीचिर्वकुला ॥ ३ ॥

श्रमचारिणी ॥ वकाश्रमनिवासा च वकासुरनिवर्हणी ॥ ३४ ॥ वासुदेव
प्रियावासुवर्णासुरविनाशिनी ॥ वीणावादनतत्वज्ञा ब्रह्माण्डोदरचारि
णी ॥ ३५ ॥ ब्रह्माण्डकोटिवलिता ब्रह्मरूपा वरूथिनी ॥ विघ्नराजप्रसूर्वि
घ्नहारिणी विघ्नवर्ज्जिता ॥ ३६ ॥ विरजा विश्वशरणा विद्यामन्त्रस्वरूपिणी
॥ वाणीविलासा विकला वलवाहनदायिनी ॥ ३७ ॥ विशिखा विन्दुरूपा च
वाग्विलासप्रदायिनी ॥ विश्वम्भरा वसुमती विश्वसर्गविवर्द्धिनी ॥ ३८ ॥
वरेण्या वारुणी या च विकचोत्पलगन्धिनी ॥ वालेन्दुमौलिर्वनिता वत्स
ला विश्ववत्सला ॥ ३९ ॥ वार्त्तालिका च वरदा विकलाङ्गी वलाहका ॥
वराहरूपिणी वश्या विश्ववश्यविधायिनी ॥ ४० ॥ वर्च्चस्करी विधुवलावि

॥ वका ॥ धाता विश्वभेषजा ॥ विलासिनी विशालाक्षी विशालवरदायिनी ॥ ४१ ॥
॥ ४ ॥ वैधृती वैबुधी वेश्या वेश्यागण निषेविता ॥ विडम्बिनी विश्वधात्री विशा
लजघनस्थला ॥ ४२ ॥ विचित्रहारवसना विचित्राङ्गी विभावरी ॥ विद्रुमा
विद्रुमनिभा विधिविष्णुनिसेविता ॥ ४३ ॥ विश्वम्भरनुता विंशा विंशाक्ष
रविभूषिता ॥ वलिदर्पहरा वल्या वसुर्वात्तिकिरूपिणी ॥ ४४ ॥ विभावि
ता विभावा च विभा बाबुधवत्सला ॥ बुधमान्या बुधधरा बुद्धिनी विभव
प्रदा ॥ ४५ ॥ वंशोत्तनकरी वंश्या वंशीवादनतत्परा ॥ विद्युल्लिका विद्युव
ती विद्युद्वर्णा विद्युत्प्रदा ॥ ४६ ॥ वंशोर्मिमालिनी वेदाक्षरपरंपरा ॥ वध ॥ रामः ॥
वंधहरा विंदा वृन्दावननिवासिनी ॥ ह्रींहिली ह्रींहिनी ह्रींहिह्रींहिप्रवु ॥ ४ ॥
वेदार

रदायिनी ॥ विमुक्तिदा विष्णुपदी विष्टिर्हृष्टिर्वरोहका ॥ ४८ ॥ व्रतिनी
व्रतरूपा च वट्टश्री वत्सा भाविधुः ॥ विश्वामित्रा विश्वसहा विबुधो घ्रान
पालिका ॥ ४९ ॥ व्यासा व्यासस्तुता विद्या वादरायणसेविता ॥ वद्धिका
कञ्चुकाविद्धा वाद्धिकारण्यवासिनी ॥ ५० ॥ वसुधा वसुधाराध्या वसु
धात्री वसुप्रदा ॥ वागीशा वाग्विभूतिश्च विदेहा वंधुरा वुधा ॥ ५१ ॥
वैरिपक्षाभिन्ना वैरिवर्गा वर्गैकहारिणी ॥ विचित्रमञ्जुमञ्जीरा वं
दनीया विडम्बना ॥ ५२ ॥ विपञ्ची वाघरसिकावस्थनत्वपहारिणी
॥ वित्ता वित्तप्रदा विन्ना विविग्नाग्नीडितानना ॥ ५३ ॥ विशूलिनी
विमोहा च वन्धुबन्धनहारिणी ॥ वह्वानना वहुकरा वहुपादा वहु

॥ वका० ॥ लदा ॥ ५४ ॥ बहुव्रीहिर्विंद्युमुखीविन्ध्यगह्वरचारिणी ॥ बेयम
॥ ५ ॥ यी वेधद्धी[illegible]विन्ध्यपादावृतारिणी ॥ ५५ ॥ बहुनेत्रा बहुभुजा ब-
हुभूषा बहु[illegible]नना ॥ बहुवर्णा बहुगतिर्वैदगर्भा वरानना ॥ ५६ ॥
वरपादा वरकरा वराङ्गी वरलोचना ॥ वरभूषा वरारोध्या वरदेवी वरे-
श्वरी ॥ ५७ ॥ वटवृक्षस्वरूपा च वटवृक्षनिवासिनी ॥ वटपत्रस्थिता वि-
श्वा वटपत्रनिवासिनी ॥ ५८ ॥ वटपत्रस्थिता वेश्या वटपत्रफलालसा ॥
वत्सवत्सार्वनन्दिनी च व[illegible]न्दी वेदनकारिणी ॥ वेदना वेदनकरी वसुदेवी
वसूत्तरा ॥ विद्या विद[illegible]ग्धा विहगा विहङ्गवाहिनी ॥ ६० ॥ विहङ्गा ॥ एमः ॥
नन्दनकरी वेत्रपत्रधरावृता ॥ वेत्रवानीरवलना वानीरफलसौख्य ॥ ५ ॥

पा ॥ ६१ ॥ वानीरकाजनवरीवानीरगहनाकुला ॥ वैतसीतरुसंस्था
न वेददानपरायणा ॥ ६२ ॥ वाल्मीकावनदुर्गा च वाल्मीकिमुनिपूजि
ता ॥ वालवन्दी बुधध्याता वाजिवारणबुड्डिकृत् ॥ ६३ ॥ वलभीवद्भुमी
वन्ध्यावटुकावटुकप्रिया ॥ विल्वपत्रकृतापीडा विल्ववृक्षकृताल
या ॥ ६४ ॥ विश्वम्वहन्ती विसती विशिनी वहिनी वधूः ॥ वर्हिवर्ह
कृतोत्तंशा वर्हिवर्हरुचिर्वृंशा ॥ ६५ ॥ वियोगिनी वियोगा च वियोग
हारिणी वधुः ॥ वैष्टतिर्वरुडीवन्द्या वृन्दारकवरप्रदा ॥ ६६ ॥ वृन्दारका
वहुमती वीजमुद्रावलिप्लुता ॥ वलिपुष्पावलिनुता वृत्रघ्नी वृत्रनिद
प्रिदा ॥ ६७ ॥ हेंद्रपुष्प च वामोरुर्व जनी वारुणी वृजी ॥ वृजिनोघ

॥ वका ॥ हावोधीवलवाहि विहारिणी ॥ ६८ ॥ वरघयवरखावरदन्तावर
॥ ६ ॥ खरा ॥ वरतेदङ्कतुभगावरभूषणभूषिता ॥ ६९ ॥ वनदेवी वनग
तावनजावनजाननना ॥ वाणिज्यवृद्धिदा वैश्यावैश्यवृत्तिविधारि
णी ॥ ७० ॥ वैश्यमातावनचरीवनदावारिद्युतिः ॥ वेणुश्रवन्तीव
नजावनस्थावाणधारिणी ॥ ७१ ॥ वाणपुष्पप्रियावाणावामदेवसु
खप्रदा ॥ वेशिनीवेशवलितावेशरावर्द्धयोकचा ॥ ७२ ॥ वर्धलाव
र्द्धरावोठावर्हिपत्रावर्हिस्पिता ॥ वैरोचनीवज्रधरीवज्रवैरोचनी
वुधा ॥ ७३ ॥ वीतिहोत्रावेगवलावीतिहोत्रप्रियावटी ॥ वर्हिज्वा ॥ लमः ॥
लावर्हिकलावर्हिजिहनुविधुन्तुदा ॥ ७४ ॥ वर्हिमण्डलवासाच ॥ ६ ॥

वह्निस्तुतिमनोहरा वल्लवीवल्लवनुतावल्गवीगणपूजिता ॥ ७५ ॥
वल्लवानन्ददा वल्लीवलदृग्जावलत्कचा ॥ वागीश्वरदावैरग्या
क वाग्भवावाक्स्वरूपिणी ॥ ७६ ॥ वाग्वीजरूपावाचाला विश्वाक्षीवि
न्दुमालिनी ॥ विश्वात्मिकाचविद्यात्मावैश्वरीविन्दुवासिनी ॥ ७७ ॥
विश्वयोनिर्विश्वलक्ष्मीवेदान्तानामकेश्वरी ॥ वेदकामाचवेदज्ञा
विगुणावेदवल्लभा ॥ ७८ ॥ वामेश्वरीवामरूपावामस्थावामलोचना
॥ वामकामावाममार्गविश्रान्तावायुजावचा ॥ ७९ ॥ वचनानन्ददा
व्रीडावायुपुत्रीवसुन्धरा ॥ विमर्लीनकुकीवेरावैराग्यजननीविधा
॥ ८० ॥ वैराग्यदावालिशाचवैकुण्ठाविगुणाविधा ॥ वैकुण्ठनाथावि

॥ वका ॥ स्तारा वैकुण्ठाधिपवल्लभा ॥ ८१ ॥ विरागता वीरघना वीचि लोल
॥ ७ ॥ पुजा विभीः ॥ विभया वनमालाढ्या विकिरा विकचस्वरा ॥ ८२ ॥ विके
स्वना च विस्फोटा विस्फोटा विभटा विसा ॥ वर्ष्योत्तरा वैरज्जा राव लो
न्मूलितपातका ॥ ८३ ॥ वकारूपा वाभा च विमाण्डा विद्धिजी विका ॥
वल्गुजी नाच वल्मूका वल्गुक कुसुमद्युति ॥ ८४ ॥ वाकुद्वा वाहुद्राव
द्रा वक्रुजा वक्रुवेटिका ॥ वापिका वरकूटा च वहुली वहुलालसा ॥ ८५ ॥
वङ्क्रिनी वस्त्रना वक्रा वहुचक्रा विवक्रष्टक ॥ विचिकित्सा विकुत्सा
च विकटा व्यङ्कटेश्वरी ॥ ८६ ॥ विकाररहिता व्यङ्गा वक्रोक्तिर्वक्रगा ॥ एमः ॥
मिनी ॥ वक्रोक्तिभाषिणी व्यक्ता वका   राक्षरूपिणी ॥ ८७ ॥ विव ॥ ७ ॥

क्रमा विरक्ता च विक्रमा वनदेशिनी ॥ विक्रान्तलोका वैध्याजानुरक्ता
मा विद्रुमद्युता ॥ ८८ ॥ विवृता विविक्ता व्रात्या विरूजा विविधा विधुः ॥
विविक्तदेशवासा च विविक्तावीजनेश्वरी ॥ ८९ ॥ विवेकिनी विकारघ्नी
विविधागमबोधिनी ॥ विगम्या विगमा वीरी बामङ्गीनामसुन्दरी ॥ ९० ॥
वागम्बा वधरा व्याघ्री व्याघ्रचर्मा धृताङ्कुशा ॥ वराङ्गना वरश्रेणि ई
रशी शर्व वरत्वदा ॥ ९१ ॥ विचारशीला विचरी विन्दुविस्पन्दरूपिणी ॥
वरिष्ठनी विष्टरगता विष्टरश्रवसः प्रिया ॥ ९२ ॥ वान्धवी वान्धवकरीव
स्तुवर्गाघविनाशिनी ॥ वैजयन्ती वैजयन्ता वैजयन्तनिवासिनी ॥ ९३ ॥
वर्चिस्मती विसर्गस्था विसर्गानन्ददायिनी ॥ विस्फुलिङ्गा ब्रह्ममाता

॥ वका० ॥ विकर्त्तनपरिष्कृता ॥ ९४ ॥ विकल्परहितावीथिर्विच्छिन्नभवबंध
॥ ८ ॥ ना ॥ विगतातनयाव्रतपरा विघ्निकोटिनिषेविता ॥ ९५ ॥ वाक्यति
र्वीकरूपाहृहस्पतिवरप्रदा ॥ विशल्याविप्लवकरी विविधायुध
धारिणी ॥ ९६ ॥ विज्ञानफलदात्री च विष्णुकोटिकृतावती ॥
विधेया विस्मयाशक्ता विविधाकारधारिणी ॥ ९७ ॥ विषज्वाला
हारिवस्त्रावीरिणी विष्णुगेहिनी ॥ विनायकाविघ्नमाता विना
यकविधायिनी ॥ ९८ ॥ विधिस्तनी च विदुषी विद्वग्रणपराहे
षा ॥ विलिखोष्णुधरत्वर्णावार्तुकावर्तुका ष्ठकोपा ॥ ९९ ॥ वृकासु ॥ रामः ॥
रघ्नी वृषभा वृषभध्यानरूगा ॥ वृषध्वजा वृषगाति वृषध्वजवि ॥ ८ ॥

वृषे

नाशिनी ॥ १०० ॥ वृषयाना वृषस्कन्धा वृहस्ता वर्म्मभेदिनी ॥ व
र्म्मसंनद्धदेहा च वलवित्यासदायिनी ॥ १०१ ॥ वृश्चिकस्था विषध
रा विपत्तिपरिहारिणी वा विदिशा वीक्षा बहुभाग्यविधायिनी
॥ १०२ ॥ वित्तवृद्धा वित्तगर्भा वित्तसञ्चयकारिणी ॥ विपन्नार्त्तिहरा
वज्रा वारेशा शीवा राम भञ्जनी ॥ १०३ ॥ वनस्पतिगता वन्या वर्णना व
र्णकाविदा ॥ वर्णनीय चरित्रा च विलेपनपरिस्कृता ॥ १०४ ॥ विले
पी विलया वीता विगीता विरूपालया ॥ व्यालकङ्कणसंवीता व्या
लयज्ञोपवीतिनी ॥ १०५ ॥ व्यालमाला धरव्याली व्यालकुण्डलशो
भिता ॥ विचित्ररत्नवलया व्योमयानावलेश्वरी ॥ १०६ ॥ विलेशया

॥ वका॰ ॥ विलवती वि लेशयविभूषिता ॥ विलेशयविलक्केरण्ठा वञ्जुला
॥ ९ ॥ रायवीजिता ॥ १०७ ॥ वितन्द्रा विगता टङ्का विश्वविंपासवा रिली
॥ विमलाम्बुधराभ्योघा वितृष्णा वर्णमालिका ॥ १०८ ॥ वयोवृन्दप
रिपोत्री विधात्री विभूषितिका ॥ विप्रकोटिपरिध्याता ब्रह्मवीजा
व्यतिक्रिया ॥ १०९ ॥ विश्वरूपा विश्वरूपपरा विलपत्ति र्विलापहा ॥ विप्र
योगा विप्रलापा विप्रयोनिर्विरश्चिवित्सुः ॥ ११० ॥ वाग्भेदा वास्विला
पा च ब्रह्मरणप्रियकारिणी ॥ ब्रह्मणाराधनीया च ब्राह्मणाचार व्र
म्बुर ॥ १११ ॥ ब्राह्मणासा विमोक्षा च विधिविष्णुकृतालया ॥ वस ॥ रमा ॥
न्तकामा वासन्तीवसंतोत्सवकारिणी ॥ ११२ ॥ वसन्तो ध्यानपाला ॥ ९ ॥

न ३ दा ३

चवसन्तागमतोषिणी ॥ वसन्ताकर्षिणी चैव वलाकर्षणकारिणी
॥ ११३ ॥ वुध्याकर्षिणिका विद्या [illegible] कर्षिणी वलकर्षिणी ॥ वारिधा
नीवारिहम्मा वारिपूर्णघटान्विः ॥ ११४ ॥ वारिध्वान्तविस्फारणवीरदा
गमकारिणी ॥ वर्षाकालप्रियावृष्टि[illegible]पिनी वारिभिस्वना ॥ ११५ ॥ वि
द्यावतारनिरतावरविद्याप्रवरूपिणी ॥ विद्याद्वन्द्वाद्वन्द्वगतिर्विद्यावि
नयशालिनी ॥ ११६ ॥ [illegible]श्रवतिर्ब्रह्मभूमिर्ब्रह्मज्ञानोपदेशिनी ॥ व
लाकिकाब्रह्मशालावैद्यनाथविभीतका ॥ ११७ ॥ विभीषणावर्त्तुला
क्षी विदारिविष्णुकण्टकाम्र ॥ वरसीमन्तीनीवार्त्तावायुधारणका
रिणी ॥ ११८ ॥ वाणयुधावायुधरावायवीवकुलध्वजा ॥ हृषाङ्क
वैरिविद्रावणपारविधुरावलशालिनी ॥
विन्ध्यागुरप्रमथनीविस्फोटब्र[illegible]हिनी ॥ ६

॥ वका ॥ वृषभावृष्याबार्षिकी वायुसेविता ॥ ११९ ॥ विचित्रपीतवसनावलि
॥ १० ॥ तापाङ्गलोचना ॥ वर्चोवर्च्चस्वलावात्स्यावाताश्मी वातरूपिणी ॥ १२० ॥
वल्वीकरिणी वोध्नी वलप्रमथिनी व्रती ॥ वाह्लिका व्यापिका व्या
सी व्यात्ता स्याचकपालिनी ॥ १२१ ॥ विकस्वना विशीर्णा च विगृही
ता मुसोभिता ॥ विग्रहा विग्रहरता विधुत्रा विसदृग्बुधिः ॥ १२२ ॥ विपा
ला विरोगा च वीरध्वजपरिग्रहा ॥ विश्वसर्गा विसर्गा च विश्वक्सेना
विषव्रता ॥ १२३ ॥ विश्वक्सेनप्रिया वर्णा विषूची नाविसौधिनी ॥ व
लिताक्षी विनीला च वितानावृषणावृषा ॥ १२४ ॥ विथुरूची रताबारणी ॥ राम: ॥
वाणापक्षा वतायुधी ॥ वणिग्भावा च वाणिज्या वर्त्तुलस्तनमण्डला ॥ १२५ ॥ १० ॥

विरलाविरलग्नासाधीरवृन्दपरिष्कृता ॥ वृषाकपायीविधुनीवि
ष्वचीविविधाशया ॥१२६॥ विरूधाबधकीबीलाविचीलाविचिला
वती ॥ विवाहिनीविवाहाच विश्वदेवीविशालिका ॥१२७॥ विफलि-
काविफलिताविषाणवरधारिणी ॥ विषाणस्याविपानाच विहिरणी
वशावर्तिनी ॥ १२८॥ विपाषाविश्वधाकाएकामभाग्यविसंधिनी ॥ वि
श्रस्रमास्पाविवशाव्यापामरसेविनी ॥१२९॥ वराटिकावराटिका-
वधूनीवासवासिनी ॥ वारिपत्रावुषलिकाविनिद्राविषदाम्बरा ॥१३०॥
विनिद्रपद्मवदनाविमदाविमनाहृषी ॥ विमनोभवाविधिरताविलो-
लिलाम्बरा ॥१३१॥ वक्षारोध्यावामसेव्यावाराणलिङ्गावलाहका ॥ वला

॥ वका ॥ हकलचिर्व्यामी विह्नैजाविविटाखुहा ॥ व्याहृष्ठाआढ़िताव काविस्ट
॥ ११ ॥ ष्ठावरहाथका ॥ विद्रुबाविद्रुबकरीविविधदेवरूपिली ॥ १३३ ॥ विम
शाव्या श्रिहीरली विकामाविष्णुस्तुनदी ॥ विधिविश्वासरूपाव
विसेव्याविस्ट नामया ॥ १३४ ॥ विश्वजन्तुपरित्राणवि वस्त्राविरि
विघ्नपा ॥ विकुण्डला विकुण्ठाववालकुण्डलशोभिता ॥ १३५ ॥ व्या
श्रिष्टशम्भुकोपाव विशिष्टावालसुन्दरी ॥ वालकामोदिनीवाक्षीवा
लभैरवरूपिणी ॥ १३६ ॥ वालदावालकाधारवालाराध्यावराकां ॥ सि
वरप्रदसमाकीर्षा वरमुण्डकाटिका ॥ १३७ ॥ वरप्रद्रावरकोडीवर ॥ एमः ॥
कीर्तिविरोलूरा ॥ वलोल्कारावलोव्याता वलमास्यावलारिपा ॥ १३८ ॥ ११ ॥

व्यूहविन्यासनिपुणा विघ्निव्यूहविकोषिणी ॥ विकोशिनी च वि
कुष्ठा विश्वष्टनतपालिनी ॥ १३९ ॥ विचित्रिणी वरूपाढ्या वैशेषि
कपरिष्टुता ॥ विशंस्था विम्ववलिता विश्वानुग्रहकारिणी ॥ १४० ॥
विशुद्धचक्रमध्यस्था विशीला बालभैरवी ॥ वैद्यानुकम्पिनी वक्री
वालराज्ञी वृषवदा ॥ १४१ ॥ विन्दुनादावास्तुदेवी विद्याराज्ञी विलो
लना ॥ वक्षोजविलसद्बालावलदेवप्रियानुजा ॥ १४२ ॥ वारिधिप्र
सुता वाद्री विश्वचक्रानुरञ्जिनी ॥ वृषध्वजाह्वयनुता ह्वषसाराह
वाङ्गना ॥ १४३ ॥ विद्यावती विनोदाढ्या विपुलज्ञानदायिनी ॥ वि
द्योतनावलदाची विलिन्न्यपविभूषिता ॥ १४४ ॥ वेदत्रनधराब्रह्मव
वालग्रहहरा वेत्री वालवंधुवलद्धरा ॥ विद्युद्दामप्रतीकाशा वसुदाम्नी वसुन्नमा ॥ विश्वार्णवतरी
वौद्धा वौद्धधर्मपरायणा ॥ व्रतस्था ताव्रतप्रभा वैचछवावरूशानगा ॥

॥वका॰॥ तीवेदफलप्रदा॥ वेदसारा वेदसंस्था वासनावाविमर्थना॥१४५॥
॥१२॥ विकर्त्तनप्रियावस्या विंबोष्ठी वज्रपाणिका॥ वैवस्वततनुतावस्त्री
विंगूरली विध्वता ग्रहा॥१४६॥ वदरीवनमध्यस्था वेत्राका विल
सद्वली॥ विश्वासभूमिर्विश्वस्ता विलीन गहनावजा॥१४७॥ वे
त्रकूटालयावर्गा विध्रुवा विध्रुवहाभा॥ वेगुरायपुक्ता वेगुरूपा व
रस्तोत्रा विविश्थिका॥१५०॥ वन्धूकपीरलेयावस्तु विनियोगा वि
गुरक्रिका॥ विनियोगहरस्यांका वह्निभानुसमप्रभा॥१५१॥ वह्नि॥ स्म॰॥
षोमा वह्निभावा वह्निकुण्डलपावपूः॥ वह्नियोनिर्वह्निमुखविहु ॥१२॥

धारावहुत्वदा ॥ १५२ ॥ विन्ध्याधारा वी[illegible] माला विन्दुन्ता वि-
न्दुसम्भवा ॥ वैन्दवी वैन्दवावासा वैन्दव ध्यानधारिणी ॥ १५३ ॥ वि-
न्दुव्रता विन्दुरूपा विन्दुस्था विन्दुविधायिनी ॥ वसन्तरागी वेदाङ्गी वे-
दान्तपरिवेष्टिता ॥ १५४ ॥ विश्वेड्या विश्वपूज्या च विश्वविश्रान्ति-
भूमिका ॥ बुधवृन्दनुता बाला बुधधीपरिवर्द्धिनी ॥ १५५ ॥ बुध-
स्वरूपा बुधधरा वेधा वेधक्रियामयी ॥ विरम्विवरदी वैरूप्य विलोपा
विश्वधारिणी ॥ १५६ ॥ विमुद्रिणी व्यग्रहर्त्री [illegible] दर्पावतारिणी
॥ विष्णुमूर्त्तिर्विष्णुपरा विश्वविश्रान्तहारिणी ॥ १५७ ॥ विश्वानुपान-
कर्त्री च विश्वसन्तापहारिणी ॥ विनोदप्रियी विबुधा वालरविद्युता

अव ४

॥ वका ॥ वहूल्लासा ॥ १५८ ॥ वहुतंत्रगताव ह्वी वहूमंत्रफलप्रदा ॥ वहूर्त्थ
॥ १३ ॥ नावहुरसा विश्वव्याप्यवतारिका ॥ १५९ ॥ ह्रीं ॥ इत्येतत्कथितं देवि ना
म्नामष्टसहस्रकम् ॥ श्रीमच्छ्रीवगलामुख्या रहस्यं सर्वकामदम् ॥
॥ १६० ॥ यश्चैतत्पठते नित्यं त्रिकालं भक्तिसंयुतः ॥ पूजयित्वा म
हादेवीं वगलां विश्वमोहिनीम् ॥ १६१ ॥ तस्मै तुष्टा महादेवि का
मानिष्टान् ददाति हि ॥ अष्टम्यां च चतुर्दश्यां नवम्यां च महेश्वरी
॥ १६२ ॥ पौर्णमास्याममावास्यां संक्रान्तौ भौमवासरे ॥ पठेद्देवीं ॥ एम: ॥
समभ्यर्च्य सर्वपापैः प्रमुच्यते ॥ १६३ ॥ पुत्रार्थी पुत्रमाप्नोति धना ॥ १४ ॥
र्थी लभते धनम् ॥ विद्यार्थी प्राप्नुयाद्विद्यां यशार्थी विपुलं यशः ॥ १६४ ॥

यंयंकामयतेकामान्तन्तम्प्राप्नोतिसाधकः॥ राजानोवशतांयां
तिसपुत्रबलवाहनाः॥१६५॥ शत्रुवर्गस्यनश्यन्तिरोगाःसंयान्तिसं
क्षयम्॥ ग्रहाःप्रशमनंयान्तिस्तापदंश्चनसंशयः॥१६६॥रहस्यं
सर्वतन्त्राणांत्वत्स्नेहात्प्रकटीकृतम्॥गोपनीयंप्रयत्नेनपठनीयं
प्रयत्नतः॥१६७॥यःपठेत्पाठयद्वापिशृणुयाद्वापिसाधकः॥सर्वा
न्कामानवाप्नोतिनात्रकार्याविचारणा॥१६८॥अप्रकाश्यमिदंस्तो
त्रंनदेयंयस्यकस्यचित्॥निन्दकायकुशीलायप्रमत्तायालसायच
॥१६९॥नास्तिकायनवक्तव्यंसत्यमेतन्मयोच्यते॥वगलाभक्तियुक्ता
यशिवभक्तिपरायच॥१७०॥दातव्यमेतद्देवेशिनाम्नामष्टसहस्रकम्

बका ॥ अन्यथानरकंयान्तिदेवताचप्रकुप्यति ॥ १७१ ॥ अज्ञातानामसा
१४ ॥ हस्रंदेवींयोभजतेधमः ॥ तस्यपूजाविविफलामंत्रोपिविफलो
भवेत् ॥ १७२ ॥ तस्मादिदंप्रयत्नेनपठनीयंदिनेदिने ॥ नातःपरतरं
स्तोत्रंनान्यदस्तिवरानने ॥ १७३ ॥ भुक्तिमुक्तिकरंनित्यंबगलाप्री
तिकारकम् ॥ १७४ ॥ ह्लीं ह्लीं ॐ तत्सदिति श्रीमद्रुद्रयामले हर
गौरीसम्वादे श्रीबगलाया बकाराद्योत्तरसहस्रनामस्तोत्रं सम्पू
र्णं शुभमस्तु ॥ इति सम्वत् ॥ १९७३ ॥ साल मार्ग … शुभम् ॥ ॥

॥ रामः ॥
॥ १४ ॥

This PDF you are browsing is in a series of several scanned documents containing the personal colleciton of Jagannath Bhattarai ji from Kathmandu, Nepal.

CV:

Jagannath Bhattarai
Date of Birth: 31 December 1960
Place of Birth: Kathmandu, Nepal
Address: Nagarjun (Ramkot), Kathmandu

Educational Qualifications
Bachelor of Science (B.Sc.) – Major in Biology
Master's Degree – Sociology & Anthropology
Shastri (Ongoing) – Balmiki Vidyapeeth

Professional Experience
Government School Teacher (Madhyamik Pratham Shreni)
Taught at Secondary Level (Madhyamik)
Taught at Higher Secondary Level (Uchcha Madhyamik)
Served as Head Teacher
Led academic and administrative development
Strengthened institutional performance and student outcomes

Areas of Interest
Sanskrit Vyakaran
Spiritual & Philosophical Studies
Educational Leadership

Digitization by eGangotri Trust
Funding by MIDF, New Delhi